

एच. जे. आरकी एवं आर. एम. मेकार्डर के विचारधारा के विशेष संदर्भ में अनेकतावाद

अनेकतावाद या बहुलवाद (Pluralism)

वह सिद्धांत जिसके अनुसार समाज में आज्ञापालन कराने की शक्ति एक ही जगह केन्द्रित नहीं होती बल्कि यह अनेक समूहों में बिकरी रहती है। ये समूह मानव जीवन की निम्न निम्न आवश्यकताएं पूरी करने का दावा करते हैं।

उन्नीसवीं सदी के आरंभ में व्यक्तिवाद का केंद्र था, उसकी तीव्र प्रतिक्रिया के रूप में केन्द्रीकृत और सर्वसत्तात्मक प्रभुतासंपन्न राज्य की मांग की जाने लगी थी। प्रभुसत्ता के बहुलवादी सिद्धांत का उदय उन्ही प्रवृत्तियों के विरोध में हुआ। बहुलवादी सिद्धांत ने राज्य के एकतंत्रीय (unitary) स्वरूप और उसकी अखंडता प्रभुसत्ता का खंडन करते उसे समाज की अन्य संस्थाओं के समकक्ष रखा और सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए राज्य के साथ-साथ अन्य सामाजिक संस्थाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला।

बहुलवाद को संप्रभुता की एकतंत्रीय (अखंडतंत्रीय) धारणा के विरुद्ध एक ऐसी प्रतिक्रिया कहा जा सकता है जो यद्यपि राज्य के अस्तित्व को बनाए रखना चाहती है किंतु राज्य की संप्रभुता का अन्त करना महत्वपूर्ण मानती है।

बहुलवादी विचारधारा के अनुसार राजसत्ता संप्रभु और निरंकुश नहीं है। बहुलवादी राज्य एक ऐसा राज्य है जिसमें सत्ता का केवल एक स्रोत नहीं है, यह विभिन्न क्षेत्रों में विभाजनीय है और इसे विभाजित किया जाना चाहिए।

जिज्जक, मैटलैंड, फिंगिस, डिजिटल, ब्रैव, पाल बेकर, जिंडर, वुमिस फॉलेट, इर्नेस्ट कार्थर, जी. डी. रच कोल, लार्की, मेकाइवर जैसे विचारकों का नाम प्रमुख है।

हेराल्ड लार्की की विचारधारा में बहुलवाद अंग्रेज कर्षणिक हेराल्ड जे. लार्की (1893-1950) ने अपनी रचनाओं - (A grammar of Politics), (An Introduction to Politics), (The foundation of sovereignty), (The state in theory and practice), (The authority of in the modern state) के अंतर्गत संप्रभुता के संकलनवादी सिद्धांत की आलोचना करते हुए संप्रभुता का बहुलवादी सिद्धांत प्रस्तुत किया।

संप्रभुता की संकलनवादी सिद्धांत का स्वतंत्र लार्की ने निम्न तर्कों के अंतर्गत किया -

1. लार्की ने सर हेनरी मैन के ऐतिहासिक विश्लेषण को स्वीकार करते हुए, सीमा विवादों को माना जो प्रभुसत्ताधारी मानते हैं; संघ के शासकों तथा राज्यों की शक्ति को सीमित करते हैं।

to be world. -